P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-III*November-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

नागार्जुन के काव्य में व्यवस्था विरोध का स्वर

प्रभा दीक्षित
प्राचार्या,
स्वामी नागाजी बालिका डिग्री कालेज,
सुमेरपुर, हमीरपुर।

सरला देवी
शोध छात्रा

सारांश

नागार्जुन भारतीय जनसंस्कृति की प्रगतिशील परम्परा में संघर्षशील आस्था के सर्वाधिक सशक्त रचनाकार हैं। नागार्जुन कविता में दल के साथ तो नहीं मगर जन के साथ बराबर बंधे रहे। लोक जीवन और लोक मानस जितनी आत्मीयता के साथ नागार्जुन ने व्यक्त किया है, उतना किसी और कवि ने नहीं, क्योंकि नागार्जुन दल से ज्यादा दलित को महत्व देते हुये दिखाई देते हैं। नागार्जुन एक जगह बैठकर कलम घिसने वालों में नहीं थे बल्कि वे घूम–घूम कर अपनी कविताओं के लिये प्रेरणा देने वाले कवि थे, तथा नागार्जुन क्राति धर्मी कवि हैं, वह जितना सामान्य जनों के बीच में रहे उनमें आत्मीयता बढ़ाई उतना विशिष्ट जनों के बीच नहीं और यही उनके जनवादी होने का प्रमुख दर्पण हैं।

मुख्य शब्द : प्रगतिवाद, सांस्कृतिक, जनसंस्कृति, ऐतिहसिक।

प्रस्तावना

स्वभाव से विद्रोही और परंपराभंजक नागार्जुन का घरेलू नाम 'ढक्कन' मिसिर तथा असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था। प्रगतिवादी कवि नागार्जुन का जन्म 1911 मे बिहार के मधुबनी जिले के सतलखा गाँव में हुआ था। आधुनिक हिन्दी कविता मे आपने फक्कड़ी स्वभाव के कारण 'बाबा' तथा मैथिली मे यायावरी प्रवृत्ति के कारण 'यात्री' नाम से सुविख्यात नागार्जुन उन दुर्लभ रचनाकारों मे एक हैं जिन्होने जीवन को जैसा जिया और देखा वैसा ही चित्रित किया। वे देश की समस्याओं के प्रति संलग्नता, समझदारी, यथार्थ बोध और क्रान्ति की भूमिका लेकर साहित्य सृजन मे प्रवृत्त हुए। नागार्जुन एक अभावग्रस्त गाँव मे पैदा हुए। उनको बचपन से ही संघर्ष करना पड़ा। पुरोहित पिता की बेरूखी और जीवन यापन का अभाव दोनो ने मिलकर उनके सामने जीने के लिए 'करो या' मरो की समस्या पैदा कर दी।

यह धरती का बेटा अपनी युवावस्था बाद देश एवं दुनिया को मुक्त कराने का संकल्प ले चुका था। देश की आजादी के बाद भी जब भारत की गरीब जनता की स्थिति में किसी प्रकार से कोई सुधार नहीं हुआ तब नागार्जुन अत्यन्त दुखी हुए और उन्होने महसूस किया कि अब भी जितनी सुख सुविधाएं हैं वो केवल पूंजीपतियों के लिए हैं न कि आम जनता के लिए तब नागार्जुन ने अपनी आवाज व्यवस्था विरोध के पक्ष मे उठायी और नागार्जुन की कविता अन्याय के प्रतिरोध मे न्याय के पक्ष मे तनकर खड़ी हो गयी। अपने काल मे वर्तमान व्यवस्था विरोध एवं विश्वस्तर पर सर्वहारा का ख्वाब देखने वाले कवियों मे नागार्जुन को प्रमुख माना जाता है।

शोषित पीड़ित जनता का मुक्ति संग्राम प्रगतिवाद का लक्ष्य था इसी लक्ष्य की सांस्कृतिक या साहित्यिक अभिव्यक्ति नागार्जुन की कविता का सारतत्व कहा जाता है। अभाव का जीवन जीने वाला यह कवि चाहता तो राष्ट्रकवि बनकर स्वतंत्र भारत मे सुखी जीवन व्यतीत कर सकता था मगर यात्री बनकर देश भर मे घूमने वाले कवि के मन मे गाँव और गाँव की माटी की गंध बसी हुई थी।

दीन हीन शोषित पीड़ित किसानो का जीवन जिस कवि ने देखा और जिया था उसे कभी भूल नही सका। वैचारिक रूप से मार्क्सवादी होने के बावजूद मार्क्सवादी उदारता या जड़ता का अतिक्रमण भी करता रहा। पहले देश की मुक्ति के लिए संघर्ष करता रहा और स्वतंत्र भारत मे आम किसान मजदूरों की स्थिति मे परिवर्तन न देखकर उनकी मुक्ति के लिए संघर्ष करने लगा।

नागार्जुन कहते हैं जब मै किसी ग्राम अंचलो के किनारे बसी हुई दलित बस्तियों के अन्दर अथवा महानगरों के पिछवाड़े गन्दे नालों के इर्द गिर्द बसी हुई झुग्गियों की दुनिया मे जाता हूँ मेरा रोम रोम नफरत से सुलग उठता है। अनैतिक या अवैधानिक काम करने वाले व्यक्ति पर अपनी आक्रोश पूर्ण प्रतिक्रिया वयक्त करना बाबा का अपना स्वभाव था। इसलिए वे कहते हैं।

झूठ मूठ सुजला सुफला के गीत न हम सब गायेंगे
भात दाल तरकारी जब तक नही पेट भर पायेंगे
सडी लाश है जमीदारियां इनको हम दफनायेंगे
गाँव गाँव पाँतर पाँतर को हम भू स्वर्ग बनायेंगे 1.

नागार्जुन इस व्यवस्था को जानते थे कि व्यवस्था के कर्णधारों की सहानुभूति शोषित पीडित दलितों के साथ न होकर पूँजीपति वर्ग के साथ हैं। आजादी के बाद बीमार लोकतंत्र की व्यवस्था ने अपने राजनैतिक क्रिया कलापों के द्वारा प्रमाणित कर दिया है कि इसके द्वारा शोषित पीड़ित जनता का उद्धार नही हो सकता चारो ओर भ्रष्टाचार का साम्राज्य फैला है। मंत्री तक करोडों घोटाले कर रहे हैं। मंहगाई बेरोजगारी लाइलाज बीमारी बन चुकी है। अपराधी माफिया समाज मे प्रभावशाली बन चुके हैं। थाने कचहरी सब बिके हुए हैं। महिलाओं दलितों एवं बच्चों का शोषण हो रहा है। लावारिस वृद्धों का कोई ठिकाना नही है। ऐसी स्थिति मे जनकवि नागार्जुन का भरोसा वर्तमान वयवस्था से उठ गया है इसलिए जनकवि नागार्जुन सहयोग के स्थान पर टकराव का मत बना लेता है। वे घोषणा करते हैं।

'प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है मेरे कवि का
जन जन मे जो ऊर्जा भर दे
उदगाता हूँ मै उस रवि का' 2.

जो कवि शोषित पीड़ित आम जन के लिए सत्ता की भी परवाह नही करता और व्यवस्था विरोध मे लिखकर जोखिम लेता है वह सही अर्थों मे जनकवि कहा जायेगा नागार्जुन व्यवस्था विरोध के कारण जेलयात्री भी बने उन्होने जनपक्षघरता में कभी सत्ताधीशों की परवाह नहीं की तथा भारतीय स्वतंत्रता के बाद उनकी कविताओं मे व्यवस्था विरोध का स्वर गूँजता रहा। वह अपने जीवन के अन्त समय तक व्यवस्था विरोध करते रहे। इमरजेन्सी के दौरान वे निडर होकर लिखते हैं

"जली ठूँठ पर बैठकर गयी कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बन्दूक" 3.

प्रगतिवादी काव्य के उन्नायक और सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिबद्ध कवि नागार्जुन वामपंथी विचारधारा से पूर्णतया प्रेरित रहे। साथ ही वर्ग संघर्ष और द्वन्दात्मक ऐतिहसिक दृष्टि से भलीभाँति परिचित रहे हैं उनका समग्र काव्य प्रगतिवाद से लेकर उसके अद्यतन समकालीन जनवाद तक दृष्टिगत होता है वे अपनी कविताओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत साधारण जनता को ही मानते हैं। यही कारण है कि वे किसानों के दुःख दर्द को अपना दुख दर्द मानते हैं" 4.

कवि वर्तमान भारतीय समाज का भ्रष्टाचार मिटाकर गरीबी बेरोजगारी मिटाकर बेहतर राजनैतिक ब्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं। यही इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या है। व्यवस्था विरोध की तात्कालिक राजनैतिक कविता लिखकर नागार्जुन ने आम आदमी के दिलों मे अपनी जगह बनायी थी।

जहाँ तक नागार्जुन की विचारधारा का प्रश्न है उन्हे एक मार्क्सवादी कवि के रूप में हिन्दी काब्य साहित्य के इतिहास मे चिन्हित किया गया है। अपने मानसिक विकास के दौरान जब नागार्जुन ने मार्क्सवाद का अध्ययन नही किया था तब भी भारत की दीन हीन शोषित किसानों की त्रासदी एवं उनके बेहतर जीवन के चित्र अपने काव्य मे उकेर रहे थे। मार्क्सवादी सर्वहारा वर्ग का पक्षधर एवं एक पूर्ण वैज्ञानिक दर्शन है। मार्क्सवाद अपने आर्थिक दृष्टिकोण 'पूंजीवाद एवं श्रम शोषण' के अतिरिक्त
मुनाफे पर जोर देता है तथा वर्ग संघर्ष की बात करता है यह भ्रम नागार्जुन को नही है। वे अपनी कविताओं मे दिखाते हैं कि पूँजीवाद का आधार मुनाफा और सूद, इसलिए है कि श्रमिक जनता के हितों से उनका अनिवार्य विरोध है। नागार्जुन पूंजीवाद के दमनकारी चरित्र पर अपने कविताओं में जितने तरीके से लिखते है। उसे देखकर उनके दृष्टिकोण के बारे मे भ्रम की गुंजाइश नही रह जाती।

वैचारिक रूप मे मानवता के पक्ष मे खडा नागार्जुन का काव्य अत्यन्त विस्तृत है। निराला के बाद नागार्जुन ही एक मात्र ऐसे कवि है जो आम जनता के सुख दुख मे भागेदारी करते है।

जन अधिकारों के लिए जीवन संघर्ष करते हुए दृष्टिगत होते है वह जनकवि है और अपनी बात कहने मे हकलाते नही हैं। "अकाल और उसके बाद कविता में वे लोकजीवन की गरीबी का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

"बहुत दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोयी उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गस्त
कई दिनो तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त
दाने आये घर के अन्दर कई दिनो के बाद
धुँआ उठा आंगन के ऊपर कई दिनो के बाद
चमक उठी घर भर की आँखे कई दिनो के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखे कई दिनो के बाद।"5.

नागार्जुन सही अर्थों मे राष्ट्रकवि इसलिए हैं कि राष्ट्र उनकी दृष्टि मे एक भू भाग न होकर विराट जनता अर्थात किसान मजदूर आम जन उनका वर्ग है जिसके प्रति वह प्रतिबद्ध हैं। नागार्जुन देश जनता तथा धरता के कवि हैं वे विश्व की सम्पूर्ण जनता के शोषण मुक्त देखना चाहते हैं।

"अधर अधर पर हास अनश्वर
सिर सिर अमिताभ ताज हो
सतत अभ्युदित जन जन प्रमुदित
सर्व सुखद सुन्दर समाज हो" 6.

"प्रगतिशीलता का प्रखर और अदमनीय रूप उनके काव्य एवं साहित्य मे संश्लिष्ट है। नागार्जुन की काव्य चेतना तत्कालिक संवेदना के रचनात्मक इतिहास की धडकन है जितनी गहन संवेदना के साथ उन्होने जीवन का चित्रण किया है, उतने ही जीवन्तचित्र वैयक्तिक संवेदनाओं के भी उजागर है। नागार्जुन का काव्य केवल मानव जीवन के गहरे यथार्थ से ही जुड़ा नही है वरन उसमें प्रकृति के भी रम्य चित्र उभरकर आये हैं।

जन जीवन से कवि नागार्जुन का अटूट संबध रहा है"।

वह जन कवि है 'उनको प्रणाम' कविता मे कवि ने अँकुठित अपरिचित जीवन को समर्पित उन श्रमवीरों को प्रणाम किया जो धुन के पक्के थे, अंतिम श्वास तक संघर्ष करते रहे। लक्ष्य प्राप्ति के लिए समाज उन्हे असफल कुंठित पराजित मान सकता है लेकिन कवि ने उनमे जिजीविषा के दर्शन किए हैं।

"दृढ व्रत और दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्तिमतरू

पर निरवधि बंदी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अंत"। 8.

"नागार्जुन के समग्र काव्य साहित्य पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि उनका साहित्य जीवन और जगत की वास्तविकता का एक विशिष्ट प्रतिफलन है वास्तविक संसार का प्रतिबिम्ब भी है और आलोचना भी। यथार्थ का दर्पण भी है और प्रगति की मशाल भी सामाजिक प्रभाव और परिवर्तन का ऐसा हथियार है, जिसकी शक्ति और प्रहार संजीवनी का कार्य करती है। भाव, अनुभूति, संवेदना व्यंग्यात्मकता के विविध रूपों का मानवीय स्वर नागार्जुन की कविता मे कलात्मकता के मणिकांचन संयोग के साथ भास्वरित है" ।9

सन्दर्भ सूची

1. नागार्जुन, लाल भवानी उद्घृत नागार्जुन चुनी हुई रचनाएं भाग 2, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्र0सं0 1985 पृष्ठ 59
2. नागार्जुन प्रतिहिंसा ही स्थायीभाव है, उद्घृत नागार्जुन चुनी हुई रचनाएं भाग 2 वाणी प्रकाशन दिल्ली प्र0 सं0 1985 पृष्ठ 257
3. वही पृष्ठ 169
4. डा0 जयप्रकाश पाण्डेय आधुनिक हिन्दी कविता मे प्रतिरोध चेतना और कवि नागार्जुन की काव्य दृष्टि दृ उद्घृत पत्रिका द्वीप लहरी दृ सं0 व्यास मणि त्रिपाठी, अंक 48 जनवरी दृ जुलाई 2013 पृष्ठ 7
5. नागार्जुन दृ प्रतिहिंसा ही स्थायीभाव है उद्घृत नागार्जुन, चुनी हुई रचनाएं भाग 2 वाणी प्रकाशन दिल्ली प्रं0 सं0 1985 पृष्ठ 84
6. नागार्जुन उद्घृत रतन कुमार कृत पुस्तक आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी प्र0 सं0 2000 ई0 पृष्ठ 300
7. डा0 शांति विश्वनाथ नागार्जुन की काव्यचेतना उद्घृत अक्षर शिल्पी अंक अक्टूबर दिसम्बर 2011 पृष्ठ 30
8. नागार्जुन उनको प्रणाम उद्घृत नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएं भाग 2 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली पेज न0 17
9. डा0 शांति विशवनाथ नागार्जुन की काव्य चेतना उद्घृत पत्रिका अक्षर शिल्पी अंक अक्टूबर दिसम्बर 2011 पृष्ठ 32